ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 12, December 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

संत गुरु रैदास की सामाजिक चेतना

डॉ. जसबीर सिंह

सहायक प्रोफसर,

हिन्दी–विभाग,

डी. ए. वी. महाविद्यालय, चीका (कैथल)

भारत देश की पवित्र भूमि पर अनेक संत/महात्माओं ने जन्म लेकर सामाजिक जीवन को प्रकाशमय बनाया है। जब–जब देश महान संतों की शिक्षाओं से दूर होता गया, हमारे समाज में ऊँच–नीच, जातिगत भेदभाव, धार्मिक भेदभाव चरम सीमा पर पहुंच गया। तत्कालीन समय में महापुरुषों ने जन्म लेकर समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया है और समाज को एक सूत्र में बांधने का काम किया है। उन्हीं महापुरुषों में संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी का नाम भी आता है। गुरु रविदास जी दार्शनिक, महान संत, कवि एवं समाज सुधारक थे। गुरु रविदास जी का पैतृक व्यवसाय चमड़े का काम करना था। वे प्रत्येक काम को बड़ी लग्न व मेहनत से करते थे। प्रारम्भ से ही रविदास जी बहुत परोपकारी तथा दयालु थे और दूसरों की सहायता करना उनका स्वभाव बन गया था। उनके मधुर स्वभाव के कारण ही लोग उनसे बड़े प्रसन्न एवं प्रभावित रहते थे। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृति है, गुरु रविदास जी का संत परंपरा की संस्कृति को बचाने में विशेष योगदान रहा है। जन आन्दोलन, समतामूलक समाज की कल्पना, मानव सेवा और क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए संत शिरोमणि गुरु रविदास जी का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। संत रविदास जी समानता लाने के लिए जीवन पर्यन्त प्रयत्न करते रहे। आमजन की सहायता करने में उनको प्रसन्नता होती थीं। घृणा और सामाजिक प्रताड़नाओं के बीच रहकर भी रविदास जी ने भेदभाव को मिटाकर प्रेम व एकता का संदेश दिया है। गुरु रविदास जी ने अपनी काव्य रचनाओं में सरल व्यवहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी राजस्थानी, खड़ी बोली, और उर्दू–फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। गुरु रविदास जी के पद सिक्खों के पवित्र धर्मग्रन्थ गुरुग्रन्थ साहिब में भी सम्मिलित है।

हिंदी साहित्य के इतिहास का भक्ति काल भारतीय समाज को किसी न किसी रूप में प्रभावित और ऊर्जस्वित करता रहा है भारतीय जनमानस अनुरागी रहा है वह तुलसी, सूर ,कबीर ,नानक ,मीरा गुरु रविदास को अपने सिर माथे बिठाकर उनमे अपने जीवन का आदर्श ढूंढता है । भक्ति कालीन संत काव्य धारा आधुनिक संदर्भ में सबसे प्रासंगिक है । उन संतों द्वारा स्थापित मानव धर्म पूरे विश्व के लिए मैत्री का संदेश है । संत कवियों में अधिकांश कवि भारतीय वर्ण व्यवस्था के उस निचले वर्ण से आए थे विशेष वर्ण शुद्र वर्ण के अंतर्गत परिभाषित किया जाता है । निम्न एवं मध्य वर्ग धार्मिक कर्मकांडों तथा जटिलताओं का सबसे बड़ा भुक्तभोगी रहा है । ऐसे ही समाज में जन्मे संत रविदास अपनी वाणी के माध्यम से समता, स्वतंत्रता ,बंधुता ,सत्यता ,कर्मशीलता, अहिंसा का ऐसा ताना बाना बुना है कि जिस से प्रेरणा ग्रहण करके समाज के एक वर्ग विशेष के स्वाभिमान तार्किकता तथा स्वतंत्रता का प्रकाश जागा है । तमाम व्यवस्थाओं को ध्वस्त करता हुआ अपनी खोज रहा है और लगातार गुरु रविदास ऊर्जा ग्रहण कर रहा है ।

संत रविदास का जन्म 1433 (1376) माघ सुदी पूर्णिमा को रविवार के दिन पिता रघु प्रथम माता गुरवलिया के घर चमार जाति में बनारस के पास मंडूर नामक गांव में हुआ था । इनके अंदर बचपन से ही सामाजिक समानता मिथ्याचार संकीर्ण धार्मिक आडंबरों ऊंच–नीच अहिंसा के प्रति एक व्यक्ति का भाव व्याप्त था । उन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय को ही अपना आजीविका का साधन बनाया था । उनकी पत्नी का नाम लोणा था। संत रैदास कबीर के समान ही अनपढ़ थे । उनके जो विचार मिलता है वह सब स्वानुभूति है । उनके शिष्यों ने उनकी वाणी का संकलन किया ।

गुरु रविदास जी सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध थे, वे हमेशा ही जातिगत भेदभाव के खिलाफ लड़े, गुरु जी बंधुता सहिष्णुता पड़ोसियों के लिए प्यार और देश प्रेम का पाठ पढ़ाते थे।

रविदास एक ही नूर ते, जिमि उपज्यो संसार।

ऊँच–नीच किस विध भए, बामन अरु चमार।। [1]

अर्थात् गुरु रविदास जी कहते हैं कि सारा संसार एक ही नूर से पैदा हुआ है, तो किस प्रकार ब्राह्मण और चमार, ऊँचे और नीचे हो गए।

भारत में सदियों से जातिवाद चरम सीमा पर रहा है। जिस कारण मानवता का नाश हुआ है। गुरु रविदास जी ने इस कुटिल व्यवस्था को पहचाना और मानव एकता पर बल दिया। वे कहते थे कि मानव जाति एक है।

मनुष्य एक ही तरह से पैदा होते हैं। रविदास ने प्रकृति के कर्म प्रधान संविधान को अपनाया व सार्थक किया और गुरुजी कहते हैं कि –

''रविदास ब्राह्मण मत पूजिए जे होउ गुणहीन।

पूजहिं चरण चंडाल के जे होवै गुण प्रवीन।। [2]

गुरु रविदास दास आजादी को मनुष्य की सबसे अनमोल रत्न मानते हैं । विश्व मनुष्य का मान सम्मान आदर प्रेम सबकुछ स्वीकार करते हैं । और गुलामी को सबसे बड़ा पाप मानते हैं अपनी एक साथ में वह कहते हैं ।

पराधीनता पाप है जान लेहू रे मीत ।

रविदास दास पराधीन सौं कौन करे है प्रीत ।। 3

वह ऊंच–नीच धनी निर्धन छोटे बड़े के भेद से खिन्न थे । जाति व्यवस्था को मानव के लिए घातक मानते हैं । मानव मात्र में समता स्वतंत्रता तथा बंद होता की स्थापना के लिए जाति के खात्मे को बड़ी गंभीरता से इंगित किया ।

जात जात में जात है जो केलन में पात ।

रविदास न मानुस जुड़ी सकें जब लौं जात ना जात ।। 4

जब तक मनुष्य की जाति की पहचान समाप्त नहीं होगी तब तक मनुष्य एक दूसरे के निकट नहीं आ सकता । सभी लोग अपनी–अपनी जातियों के फेर में उलझे हुए हैं । जहाँ जाति मुख्य हो जाती है मनुष्यता वहीं समाप्त हो जाती है । इसलिए संत रविदास जाति का समाधान चाहते हैं ।

जात–जात में जात है, ज्यों केलन में पात।

रविदास ना मानुष जुड़ सके, जब लौं जात–पात।। [5]

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 12, December 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

उन्होंने अपना सब कुछ लुटा कर भी आजादी के धर्म की रक्षा करने का उपदेश दिया है । वे उसे ही शूरवीर मानते हैं जो अपने धर्म की रक्षा के लिए अपने शरीर के अंग अंग कटने पर भी नहीं डगमगाते ।

रविदास सोई सूरा भला जउ लारै धर्म के हेत ।

अंग अंग कटि भुई गिरै तबुह न छाँड़े खेत ।। 6

मध्यकालीन भारतीय समाज में जाति एवं वर्ग की जटिलताएं अत्यधिक गहरा गई थी । समाज में दो ही धर्मों का सर्वाधिक हस्तक्षेप था । हिंदू और इस्लाम शुद्र से दोनों ही धर्म घृणा करते थे उसे मृतप्राय बना दिया गया था । दोनों ही धर्म और पाखंडों एवं आडंबरों में फंसे हुए थे शूद्र जातियों को धर्म से पूर्णता काट दिया गया था। धार्मिक आयोजनों में उनकी उपस्थिति निषिद्ध थी । संत रविदास की साखियों में जन्म आधारित श्रेष्ठ एवं रिश्तों के प्रति आक्रोश मिलता है । वे उन्हें ललकार उठते हैं ।

ऊंचे कूल के कारणे ब्राह्मण कोई न होई ।

जौ जानि ब्रह्म आत्मा, रविदास कहे ब्राह्मण सोय ।। 7

उन्होंने स्वाभिमान पूर्वक जीवन को व्यक्ति की सबसे बड़ी उपलब्धि माना है । हिंदू धर्म निठ्ठले धर्माचार्यों का धर्म है । जिसमें आश्रम संस्कृति का महिमा मंडन है । परंतु गुरु रैदास ने जनमानस के समक्ष श्रम का महत्व बता रहे है । काम करके स्वाभिमान पूर्वक जीवन व्यतीत करने का उपदेश देते हैं । वह कहते हैं कि स्वाभिमान की रक्षार्थ गई ने कमाई कभी भी निष्फल नहीं जाती ।

रैदास स्रम कर खाइहि जौ लौ पार बसाय ।

नेक कमाई जौ करइ, कबहुँ न निहफल जाय ।। 8

संत रैदास ने श्रम को ईश्वर के बराबर का दर्जा दिया । उन्होंने श्रम करने वालों को समाज में उच्च स्थान पर बिठाने का उपदेश दिया । अभी तक पोथी , माला जपने वालों को ही पूजा के तौर पर लिया जाता था । उसका प्रभाव क्या होता था कि शारीरिक श्रम करने वालों को हेय नजर से देखा जाता था । जो उनके सामाजिक आर्थिक शोषण को वैधता देता था । उन्होंने श्रम को सुख चौन

का आधार बताया । संत रैदास ने इस सच्चाई को भांप लिया था कि जो व्यक्ति बिना श्रम के संसार में ऐश्वर्या का आनंद उठाता है वह कहीं ना कहीं सुख से वंचित रहते हैं ।

जिह्वा सौ ओंकार जप, हाथन सों कर कार ।

राम मिलिहि घर आई कर , कहि रैदास बिचार ।।

नेक कमाई जौ करिहि, ग्रह तजि बन नहि जात ।

रैदास हमरो राम राव, ग्रह महि मिलिहीं आय ।।

स्रम को ईसर जानि के जौ पूजिहि दिन रैन ।

रैदास तिनहि संसार मँह, सदा मिलिहि सुख चौन ।। 9

गुरु रैदास जीं ऐसे समाज की कल्पना करते है जहां सब सुख चौन से रहे । न कोई छोटा हो और न कोई बड़ा जहां कोई भीं गम न हो चारो तरह सुख हीं सुख हो । वे बेगमपुरा कीं स्थापना करना चाहते है जहाँ दुख, द्वेष, गम ,अभाव,भेदभाव नहीं होगा । बल्कि समता, स्वतंत्रता, बंधुता और न्याय होगा सभी को भर पेट अनाज मिलेगा ।वहीं पूर्णतः सुख का धाम होगा ।

ऐसा चाहूँ राज मैं , जहां मिलै सबन को अन्न ।

छोट बड़ सब सम बसै , रैदास रहे प्रसन्न ।।

अब हम खूब वतन घर पाया । ऊँचा खैर सदा मन भाया ।।

बेगमपुरा सहर को नाउँ । दु:ख अंदेस नहि तिहिं ठाउँ ।।

ना तसबीस ,खिराज न मालू । खौफ न खता न तरस जवालू ।।

काइम दाइम सदा पातसाहीं । दोम न सोम एक सो आहि ।।

आवादान सदा मसहूर । उहाँ गनी बसै मामूर ।।

तिउँ तिउँ सैर करै जिऊँ भावै । मरहम महल न को अटकावै ।।

कहे रैदास खलास चमारा । जो उस सहर सौं मींत हमारा ।।

रैदास जु है बेगमपुरा , उह पूरण सुख धाम ।

दुख अंदोह अरु द्वेष भाव, नाहीं बसै तिहिं ठाम ।। 10

संत रविदास जी आशावादी थे, वे अध्यात्मिक व सामाजिक धरातल पर मानव संस्कृति की प्रतिष्ठा करते हैं। इन्होनें विश्व–बंधुत्व की भावना को प्रोत्साहित किया है। समाज कल्याण इनका प्रथम लक्ष्य था। वे अपने युग के सजग प्रहरी थे। आज भी गुरु रविदास जी की वाणी उतनी ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है जितनी मध्यकाल में थी। विश्व समुदाय उनकी वाणी का सदैव ऋणी रहेगा।

संदर्भ सूची

1. सुरेन्द्र कुमार सेलवाल, संत रविदास और दलित अस्मिता, पृ. 37, विकास प्रिंटर्स, हिसार–125001, 2017
2. वही, पृ. 29
3. रविदास वचन सुधा, डॉ सरन दास भनोट ,लोक संपर्क विभाग हरियाणा, पृ० 158 ।
4. वही, पृ० 152 ।
5. एस.एस. गौतम, ऐसा चाहूँ राज मैं, पृ. 11, गौतम बुक सैंटर, दिल्ली–2012
6. वही, पृ० 155 ।
7. वही, पृ० 153 ।
8. वही, पृ० 150 ।
9. दलित मुक्ति की विरासत संत रैदास, डॉ सुभाष चंद्र, कुरुक्षेत्र, लोकपथ प्रकाशन, पृ० 74 ।
10. महान आजीवक कबीर,रैदास और गोसाल , डॉ धर्मवीर, नई दिल्ली वाणी प्रकाशन,2017, पृ० 503 ।